



03 उम्मीदवार कोई भी हो, पीएम मोदी के नाम पर ही...

वर्ष : 11

अंक : 319

पटना, बुधवार, 03 अप्रैल, 2024

विक्रम संवत् 2080

पेज : 12

मूल्य ₹ : 03.00

www.pratahkiran.com

अधिकतम तापमान 29°C
व्यूनतम तापमान 20°C

बाजार
सोना 71,060
चांदी 79,900
संसेक्स 73,903
निफ्टी 22,453

संक्षिप्त खबरें
यहुल गांधी बुधवार को वायनाड से करेंगे नामांकन

तिरुवनंतपुरम्। कांग्रेस नेता राहुल गांधी बुधवार को लोकसभा चुनाव के लिए वायनाड से आजगा नामांकन दर्शिल करेंगे। यहां सोमवार दोबारा चुनाव लड़ रहे हैं। नामांकन से पहले वह विरचित क्षेत्र में एक रोट शो में हिस्टोरी के द्वारा एंड्रोफोन में चुनाव के दूसरे वर्ष में 26 अप्रैल को मुदानाम होगा। राहुल गांधी का मुकाबला सीपीआई महासभित वी. राजा की पारी सीपीआई उम्मीदवार एनी राजा के द्वारा चुनाव के लिए भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि 18 वर्ष पूर्व तक तो बिहार में महाली घोरे से निकलने में डरी थी, लेकिन एनडीए के कार्यकाल में स्थितियाँ बदली हैं। प्रधानमंत्री ने साफ लाहजे में कहा कि अगर बिहार में हम एविएशन द्वारा किया है। उन्होंने बोला कि एनडीए के कार्यकाल में स्थितियाँ बदली हैं। प्रधानमंत्री ने आठ वर्षों के द्वारा चुनाव के लिए वायनाड आ रहे हैं। राज्य भजपा प्रमुख ने जियन ने भी इंडिया लोक की पारी सीपीआई की एनी राजा के लिए भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि एनडीए के कार्यकाल में स्थितियाँ बदली हैं। प्रधानमंत्री ने आठ वर्षों के द्वारा चुनाव के लिए वायनाड आ रहे हैं।

## बिहार में मजबूत होंगे तो केंद्र को काम करने की और मिलेगी शक्ति: पीएम मोदी

● पीएम ने गेया बूथ, सबसे मजबूत का दिया टिप्प

प्रातः किरण



लोस चुनाव : पीएम ने बूथ अध्यक्ष और पार्टी कार्यकर्ताओं से की बात, बढ़ाया उत्साह

पटना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को बिहार के बूथ अध्यक्ष, पन्ना प्रमुखों और भाजपा कार्यकर्ताओं से सोधा सवाल करते हुए, उनमें जोश भरा उत्साह दिया। इस दौरान उन्होंने कार्यकर्ताओं से मेरा बूथ, सबसे मजबूत करने का टिप्प देते हुए कहा कि जो पार्टी बूथ जीतने पर जार लगाती है वह पार्टी चुनाव भी जीतती है। प्रधानमंत्री ने इस दौरान भाजपा प्रधानमंत्री के साथ सोधा सवाल करते हुए कहा कि जो पार्टी बूथ जीतती है वह पार्टी चुनाव भी जीतती है। इस दौरान उन्होंने कार्यकर्ताओं से मेरा बूथ, सबसे मजबूत करने का टिप्प देते हुए कहा कि जो पार्टी बूथ जीतती है वह पार्टी चुनाव भी जीतती है। उन्होंने कहा कि मोदी की गारंटी है। प्रधानमंत्री के सीधे सवाल को भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष सह उप मुख्यमंत्री भिक्षु भाई दलसाहित नहीं कहा।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि मिथिलांचल के लोग तो भव्य राममंदिर बनने से बहुत खुश होंगे। मिथिलांचल को मौसी सीता की धनीती बताते हुए कहा कि वहां के लोग तो भाजपा राम को पाहूँ मानते हैं। इस दौरान प्रधानमंत्री ने विजय योजनाओं की भी चाची की। उन्होंने कहा कि मोदी की गारंटी है। प्रधानमंत्री के सीधे सवाल को भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष सह उप मुख्यमंत्री सप्ताह चौधरी, संगठन महामंत्री भिक्षु भाई दलसाहित नहीं कहा।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार से गरीबों और मध्यम वर्ग का हक छिनता है और चुनाव के लिए प्रधानमंत्री के शुभांगत करते हुए प्रधानमंत्री 19 अप्रैल को होने वाले लोकसभा चुनाव के लिए प्रधानमंत्री के शुभांगत करते हुए प्रधानमंत्री ने इस दौरान उन्होंने कहा कि आपे वाले पांच साल अभूतपूर्व काम और बढ़े फैसले के लिए होंगे लेकिन उन्हें लिए जाना को उठाएं और बढ़े फैसले के शहाजादे को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार से गरीबों और मध्यम वर्ग का हक छिनता है और चुनाव के लिए भ्रष्टाचार करते हुए प्रधानमंत्री को उठाएं। प्रधानमंत्री के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।

लगानी की सलाह देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के लिए जाना को उठाएं।









## विपक्षी एकता के मायने

राजधानी दिल्ली के एतहासिक रामलाला मदान में विष्णु गठबंधन इडिया के समर्थक और भाजपा-विरोधी बड़े नेता मौजूद थे। एकजुटत साक नजर आ रही थी। उनमें से अधिकतर ने देश को आगाह किया विष्णु यदि तीसरी बार भी मोदी सरकार बनी, तो देश को सविधान बदलने के शुरूआत होगी। शासन और भी एकधिकारवादी हो जाएगा। भारत रूस बन सकता है। लोकतंत्र की आत्मा खत्म कर दी जाएगी। जिस तरह रूस पर पुतिन का राज है, उसी तरह भारत में मोदी की स्थिति होगी। यह आशंककांग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खड्गे ने जताई थी। सविधान को बदलने के बात राहुल गांधी ने की, जिन्हें किन्हीं भाजपा नेताओं ने ब्रीफ किया था। यहां तक आगाह किया गया कि देश में आग लग जाएगी। इनके अलावा अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, शरद पवार, सीताराम येचुरी, भगवंत मान आदि विष्णु नेताओं ने रोजगार का संकट, बेरोजगारी, मंडगाई, किसानों का एमएसपी, जांच एजेंसियों की निरंकुशता और प्रशासन आदि के साझे मुझे उठाकर अपने लोकसभा चुनाव अभियान को गति दी। सारांश में विष्णु की साझा रैली कई मायनों में असर छोड़ गई। एक बार फिर इडिया बिखरने के बजाय लामबंद होता दिखाई दिया। आपसी विरोधाभास को भी उहोंने



# उमश चतुवदा लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं

11

ला कसना चुनाव का प्रक्रिया जारा हा, इसी बीच किसी राज्य के मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी हो और उस पर राजनीति ना हो, ऐसा संभव ही नहीं है। दिल्ली के कथित आबकारी घोटाले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और भारत राष्ट्र समिति की नेता के कविता को प्रवर्तन निदेशलाय यानी ईडी ने गिरफ्तार किया है। ईडी का दबाव है कि इन गिरफ्तारियों के पीछे कोई राजनीति नहीं है। लेकिन राजनीति और लोक का एक बड़ा हिस्सा ऐसा है, जो इन गिरफ्तारियों के पीछे राजनीति देख रहा है। मोदी विरोधी आईएनडीआईए गठबंधन में चूकि केजरीवाल भी शामिल हैं, लिहाजा गठबंधन के नेता इन गिरफ्तारियों को सिर्फ और सिर्फ राजनीतिक बताने-बनाने में जुट गए हैं। उनका एक ही सवाल है कि आखिर सिर्फ विपक्षी नेताओं को ही ईडी या सीबीआई निशाना क्यों बना रहे हैं? बार-बार ऐसा कहकर एक तरह से मोदी विरोधी मोर्चे के नेताओं की कोशिश यह है कि इन गिरफ्तारियों को भ्रष्टाचार की बजाय सिर्फ राजनीति का रंग दिया जाए और इसके जरिए मोदी विरोधी वोटों की फसल काट ली जाये।

लेकिन सवाल यह है कि क्या ऐसा संभव है? मोदी के उभार के बाद के दोनों संसदीय चुनावों में दिल्ली विधानसभा में अपर बहुमत रखने वाली आम आदमी पार्टी एक भी सीट हासिल नहीं कर पाई है। इस बार तो आम आदमी पार्टी ने उस कांग्रेस के साथ गठबंधन कर लिया है, जिसके प्रष्टाचार के विरोध में उसका समूचा अस्तित्व पनपता रहा। दिल्ली में लोकसभा की सात सीटें हैं, जिनमें तीन सीटों पर जहां कांग्रेस चुनाव लड़ रही है, वहीं आम आदमी पार्टी चार सीटों पर मैदान में है। पिछले दो आम चुनावों में आम आदमी पार्टी की स्थिति तो सरे नंबर की पार्टी बनकर रह गई थी। गठबंधन करके कांग्रेस और आम आदमी पार्टी-दोनों ने उम्मीद लगा रखी है कि दो आम चुनावों से जारी दिल्ली में उनका सूखा शायद कम हो जाए। केजरीवाल की गिरफ्तारी के पहले तक ऐसा नहीं लग रहा था कि विगत के दो चुनावों से इतर कांग्रेस और आम आदमी पार्टी का इतिहास इस बार इतर होने जा रहा है। लेकिन केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद दोनों पार्टियों को सहानुभूति लहर उठने की उम्मीद है। उन्हें लगता है कि सहानुभूति की वजह से इस बार भारतीय जनता पार्टी के किले में सेंध लग सकती है।

शराब घोटाले में केजरीवाल के पहले उनके दो स्तंभों पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और गणसभा सदस्य सजव लहर निरभासा हा। युक्त हा उनकी जमानत की वाचिकाएं खारिज हो चुकी हैं। दिल्ली शराब नीति घोटाले में दिल्ली से तीसरी बड़ी गिरफ्तारी के जरीवाल की हुई है। इसी केस में भारत राष्ट्र समिति की नेता और पार्टी अध्यक्ष के, चंद्रशेखर राव की बेटी के कविता भी गिरफ्तार हैं। केजरीवाल को गिरफ्तार करने से पहले ईडी ने नौ बार समन देकर उन्हें बुलाया। लेकिन हर बार वे ईडी के सामने जाने से बचते रहे। केजरीवाल का राजनीतिक अनुभव भले ही कम हो, लेकिन उनकी पैंतेरेबाजी से साफ है कि राजनीति करने में वे पुराने से पुराने नेताओं पर भारी हैं। समन को अनदेखा करके एक तरह से वे इस मुद्दे को जिंदा रखने और इसके जरिए अपने लिए बोटरों की सहानुभूति हासिल करने की प्रक्रिया का ही विस्तार है। भारतीय समाज भावुक होता है। इस भावुकता का फायदा हर राजनीतिक दल अपने तई उठाते रहे हैं। इसी अंदाज में केजरीवाल परिवार भी आगे बढ़ रहा है। ईडी की हिरासत से ही वे दिल्ली के लिए दो आदेश जारी कर चुके हैं। पहले में जहां उन्होंने दिल्ली की सीवर व्यवस्था दुरुस्त करने का आदेश दिया है, वहीं उनका दूसरा आदेश स्वास्थ्य व्यवस्था को दुरुस्त रखना है। दिल्ली में विपक्षी भूमिका निभा रही भारतीय जनता पार्टी इस पर हंगामा कर रही है कि जेल में रहते हुए भी आम आदमी पार्टी प्रमुख सिफर दिल्ली के ही बारे में सोच रही हैं। इसके साथ कर रहा है कि जेल को तंग किया जा रहा है। दिल्ली की बसों, मेट्रो आदि में ऐसी चार्चाएं सनाई दे रही हैं। हालांकि जान आदम साट के कालाशरा इस एक तबका ऐसा भी है, जो मानता है कि भ्रष्टाचार विरोधी अंदोलन से बहाना दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना के एक बयान से दिल्ली सरकार की बर्खास्तगी को लेकर बाले में उस वर्ग के लाग ज्यादा हैं, जिन्हें दिल्ली सरकार की कल्याणकारी हो जाएगी। उपराज्यपाल के इस बयान के बाद आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में राष्ट्रपति शासन लगाने की कोशिशों का जोरदार विरोध किया। वैसे माना यह जा रहा है कि यह विरोध भी आम आदमी की गिरफ्तारी को नाजायज बताने में जुटी कांग्रेस की स्थित सांप-छुंदंदर जैसी हो गई है। लोग चुनियों लेने से बाज नहीं आ रहे। लोगों का कहना है कि जिस कांग्रेस को भ्रष्टाचारी बताते-बताते ने नष्ट कर दिया, वह भी उसकी ईमानदारी की गारंटी दे रही है। यही वजह प्रहसन का बिंदु है, जिसकी वजह से दिल्ली के आम चुनावों में बीजेपी उम्मीद लगा सकती है। हालांकि इस प्रहसन के प्रभाव को लेकिन यह भी सच है कि दिल्ली बीजेपी की यह कोशिश बहुत ज्यादा कामयाब नहीं है। दिल्ली का एक वर्ग ऐसा भी है, जो मानता है कि केजरीवाल को तंग किया जा रहा है। दिल्ली की बसों, मेट्रो आदि में ऐसी चार्चाएं सनाई दे रही हैं। हालांकि

## **સાધુ વિજય**

उनकी जानत की याचिकाएं खारिज हो चुकी हैं। दिल्ली से तीसरी बड़ी गिरफ्तारी के जरीवाल की हुई है। इसी केस में भारत राष्ट्र समिति की नेता और पार्टी अध्यक्ष के, चंद्रशेखर राव की बेटी के कविता भी गिरफ्तार हैं। के जरीवाल को गिरफ्तार करने से पहले ईडी ने नौ बार समन देकर उन्हें बुलाया। लेकिन हर बार वे ईडी के सामने जाने से बचते रहे। के जरीवाल का राजनीतिक अनुभव भले ही कम हो, लेकिन उनकी पैतरेबाजी से साफ है कि राजनीति करने में वे पुराने से पुराने नेताओं पर भारी हैं। समन को अनन्देखा करके एक तरह से वे इस मुद्दे को जिंदा रखने और इसके जरिए अपने लिए वोटरों की सहानुभूति हासिल करने की कोशिश करते रहे। गिरफ्तारी के बावजूद मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा ना देकर भी के जरीवाल राजनीति कर रहे हैं। ईडी की हिरासत से ही वे दिल्ली के लिए दो आदेश जारी कर चुके हैं। पहले में जहां उन्होंने दिल्ली की सीवर व्यवस्था दुरुस्त करने का आदेश दिया है, वहीं उनका दूसरा आदेश स्वास्थ्य व्यवस्था को दुरुस्त रखना है। दिल्ली में विपक्षी भूमिका निभा रही भारतीय जनता पार्टी इस पर हंगामा कर रहा है। दिल्ला के मुख्यमंत्री वर्ष के जरीवाल को हटाने की मांग वाल याचिका दिल्ली हाईकोर्ट में दाखिल की गई। जिसे हाईकोर्ट दुकरा चुका है। इसके बावजूद नैतिकता के आधार पर भाजपा के जरीवाल से इसीपे कमांग कर रही है। लेकिन के जरीवाल वे खेमे के तर्क है कि संविधान में कहानी लिखा है कि हिरासत में लिए गए व्यक्ति को अपने पद से इस्तीफा दे ही देना होगा। इस तर्क के सहायते के जरीवाल मुख्यमंत्री के पद पर जारी रखा जा सकता है।

हिरासत से आदेश देना और उसका आम आदमी पार्टी द्वारा भरपूर प्रचार किया जाना दरअसल के जरीवाल के प्रति सहानुभूति हासिल करने वाले प्रक्रिया का ही विस्तार है। भारतीय समाज भावुक होता है। इस भावुकता का फायदा हर राजनीतिक दल के अपने तई उठाते रहे हैं। इसी अंदर में के जरीवाल परिवार भी आगे बढ़ रहा है। के जरीवाल की पत्नी सुनीता के जरीवाल के भावुकता वे बयान भी इसका ही उदाहरण हैं। दरअसल इनकदमों से आम आदमी पार्टी दिल्ली के लोगों को यह संदेश देने की कोशिश कर रही है कि जेल में रहते हुए भी आम आदमी पार्टी प्रमुख सिर्फ दिल्ली के ही बारे में सोच रहे हैं। इसके साथ

हा आम आदमी पाटा का काशशरा इस बहाने सहानुभूति हासिल करना है। इस बीच दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना के एक बयान से दिल्ली सरकार की बख्खास्तगी को लेकर अटकलें तेज हो गईं। उपराज्यपाल ने यह कह दिया कि जेल से दिल्ली की सरकार नहीं चलने दी जाएगी। उपराज्यपाल के इस बयान के बाद आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में राष्ट्रपति शासन लगाने की कोशिशों का जोरदार विरोध किया। वैसे माना यह जा रहा है कि यह विरोध भी आम आदमी पार्टी की रणनीति का ही हिस्सा है। ताकि केंद्र सरकार दिल्ली सरकार को बख्खास्त कर दे। इससे केजरीवाल के पश्च में जोरदार लहर उठ खड़ी होगी और मौजूदा आम चुनावों में आम आदमी पार्टी इसका फायदा उठा सकेगी। वैसे भारतीय जनता पार्टी की ओर से केजरीवाल को दोषी बताने की खबर कोशिशें हो रही हैं। दिल्ली में विपक्षी दल होने के नाते उसकी यह जिम्मेदारी भी ही है। लेकिन यह भी सच है कि दिल्ली बीजेपी की यह कोशिश बहुत ज्यादा कामयाब नहीं है। दिल्ली का एक वर्ग ऐसा भी है, जो मानता है कि केजरीवाल को तांग किया जा रहा है। दिल्ली की बसों, मेट्रो आदि में ऐसी चर्चाएं सुनाई दे रही हैं। हालांकि एक तबका एसा भी है, जो मानता है कि ब्राह्माचार विरोधी आंदोलन से उभरे के जरीवाल के प्रति सहानुभूति रखने वाले में उस वर्ग के लोग ज्यादा हैं, जिन्हें दिल्ली सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का फायदा मिल रहा है। हालांकि दिल्ली की खस्ताहाल बसें, व्यवस्था की ढिलाई आदि के चलते केजरीवाल सरकार से नाराजी रखने वाला भी एक वर्ग है। जो इस गिरफ्तारी को जायज ठहरा रहा है। केजरीवाल की गिरफ्तारी को नाजायज बताने में जुटी कांग्रेस की स्थित सांप-छ्वांसरूप जैसी हो गई है। लोग चुटकियां लेने से बाज नहीं आ रहे। लोगों का कहना है कि जिस कांग्रेस को ब्राह्माचारी बताते-बताते केजरीवाल ने नष्ट कर दिया, वह भी उसकी ईमानदारी की गारंटी दे रही है। यही बजह प्रहसन का बिंदु है, जिसकी बजह से दिल्ली के आम चुनावों में बीजेपी उम्मीद लगा सकती है। हालांकि इस प्रहसन के प्रभाव को कम करने की कोशिश में आम आदमी पार्टी ही नहीं, कांग्रेस भी प्राणपूर्ण से जुटी है। दिल्ली की काया पलटने वाली कांग्रेसी मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के बेटे संदीप दीक्षित कभी कहा करते थे कि वे केजरीवाल से अपनी मां के अपमान का बदला जरूर लेंगे।

संजय गोरखामी

कानूनों के बापूदूँ पुलानिलापकर एक अच्छा आर नज़्बून पाग्नून नाना गवा है। द्वितीय उपर्युक्त चर्चा बाद की दुनिया में लोकतंत्र को विश्व स्तर पर बहुत व्यापक मान्यता प्राप्त हुई। जो देश लोकतांत्रिक नहीं थे उन्होंने भी इसे अपनी कमी के रूप में स्वीकार किया और सीमित लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं अपनाने वाले चेष्टा की। पिछले लगभग दो दशकों में कई देशों में तानाशाहियों को समाप्त कर लोकतांत्रिक सरकारों का स्थापना हुई। पर लोकतंत्र की इस ऊपरी प्रगति के बावजूद बढ़ती संख्या में विचारवान लोगों ने महसूस किया कि लोकतांत्रिक व्यवस्था भीतर ही भीतर खोखली होती जा रही है। इसे सही अथरे में लोगों का भलाई और भागेदारी की व्यवस्था बनाने के लिए इसमें कई महत्वपूर्ण सुधारों की जरूरत है। सूचना देने जन-अधिकार को भी ऐसे ही एक महत्वपूर्ण सुधार के रूप में देखा जा रहा है जो किसी भी लोकतंत्र देने के लिए आवश्यक है। पर क्या सूचना के अधिकार का कानून बन जाना ही पर्याप्त है? क्या मात्र इससे यह सुनिश्चित हो जाएगा कि सरकार और प्रशासन सही मायर्न में पारदर्शी हैं और वे लोगों से कुछ छुपाना नहीं चाहते? अमेरिका में बहुत समय से सूचना के अधिकार/स्वतंत्रता का कानून मौजूद है



ने कि लोकतात्त्विक व्यवस्था भीतर है।

1

कोर्ट द्वारा असंवैधानिक घोषित किये जा चुके चुनावी चन्दा बांड्स को लेकर प्रधानमंत्री मोदी जी गर्व के साथ ही नहीं बल्कि सीना ठोक कर कह रहे हैं कि जो लोग आज इलेक्टोरल बांड्स को लेकर नाच रहे हैं, वे कल पछतायेंगे। मोदी जी ने बात जिस दमखम से कही है उससे लगता है कि वे सुप्रीम कोर्ट के नानीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी नहीं रहते हैं कि- हर बात में राजनीति नहीं रखना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि मुझे इलेक्टोरल बांड्स आज भी गंगाजल की तरह पावन हैं। एक टीवी इंटरव्यून के दौरान जब उनसे यह पूछा गया कि- क्या चुनावी बॉण्ड डेटा से सत्तारूढ़ भाजपा को झटका लगा है? तो मानवीय मोदी ने कहा, मुझे ताकाइ एक हमें ऐसा क्या कर दिया कि मैं इसे एक झटके के तौर पर देखना चाहता हूँ। यदि उनके अपार्टमेंट सीना, मोदी जी यानि उलटा चोर देखता है तो उसे बिल्कुल नहीं कर सकता।

इसे (बॉण्डक के विवरण) को लेकर हंगामा कर रहे हैं और इसपर गर्व कर रहे हैं उहें पछतावा होगा। देश का सबसे बड़ी अदालत को फैसले को देश का सबसे बड़ा और जिम्मेदार अदामी ही यदि खारिज रहता दिखाई दे तो किसी दूसरे को कोई क्या उम्मीद कर सकता है? उन्होंने जो देकर कहा कि- कहा कि कोई भी प्रणाली पूरी तरह से सही नहीं है यह भायियों को दूर किया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि इस विषय पर हंगामा करने वाले लोग पछतायेंगे। जाहिर है कि मोदी जी हैं तो, सभी विधान बड़ा है और न कोई अदालत। वे सबसे ऊपर थे, हैं और रहे हैं। और वे स्वामीवाकिंच हैं। यदि उनके अपार्टमेंट सीना, मोदी जी यानि उलटा चोर देखता है तो उसे बिल्कुल नहीं कर सकता।

कि मोदी जी इस असंवैधानिक घोषित किये जा चुके इलेक्टोरल बांड को सम्मान संवैधानिक बना देंगे, क्योंकि वे बांड उनकी पार्टी के लिए कामदेनु साबित हुए हैं। दरअसल मैं मोदी जी का यदि खारिज रहता दिखाई दे तो किसी दूसरे को कोई क्या उम्मीद कर सकता है? उन्होंने जो देकर कहा कि- कहा कि कोई भी प्रणाली पूरी तरह से सही नहीं है यह भायियों को दूर किया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि इस विषय पर हंगामा करने वाले लोग पछतायेंगे। जाहिर है कि मोदी जी हैं तो, सभी विधान बड़ा है और न कोई अदालत। वे सबसे ऊपर थे, हैं और रहे हैं। ये वो स्वामीवाकिंच हैं। यदि उनके अपार्टमेंट सीना, मोदी जी यानि उलटा चोर देखता है तो उसे बिल्कुल नहीं कर सकता।

बनवाने के लिए दुर्गा कहा गया था, कांग्रेससियों को चाहिए कि वो मोदी जी को देश को जबरन विश्वगुरु बनाने के लिए तांडव करने वाला शिव कहकर उत्तरण हो जाये। मोदी जी ने कांग्रेस द्वारा पिछले साढ़े छह दशक में जितना कुछ किया था, उसे एक दशक में ध्वस्त कर दिया। निर्माण और ध्वंश दो समानांतर क्रियाएँ हैं, कोई देश बनाता है तो कोई करने में माहिर है, वैसा देश में आज कोई दूसरा नेता नहीं है। मोदी जी दोनों काम एक दूसरा कर रहे हैं। वे अपने सपनों का देश साना रहे हैं, जिसमें उनके अलावा कोई दूसरा सुप्रीम नहीं है। फिल्म निर्माता मनोज कुमार यदि आज अपनी कोई नई फिल्म बनाता है तो उसमें नीति के जनसंघ नहीं है। ये वो शीर्ष है जिसके लिए मोदी जी नहीं है। इंदिरा गांधी में भी नहीं, जबकि वे तो तबकी भाजपा (जनसंघ) के लिए दुर्गा थीं। इंदिरा जी को भाजपा (जनसंघ) ने उदात्तापूर्वक 1971 के अपार्टमेंट संग्राम में जब चांदोली देवी को बांद देने वाले लोगों के काम कर दिया है तो उसे एक झटके के तौर पर देखा जाता है। यदि उनके अपार्टमेंट सीना, मोदी जी यानि उलटा चोर देखता है तो उसे बिल्कुल नहीं कर सकता।

मोदी बना रहा है तो दस मोदी बगाड़ रहे हैं। आज किसी भी राजनीतिक दल में, किसी सामाजिक कार्यकर्ता में इतनी क्षमता नहीं है कि वो इलेक्टोरल बांड के मामले में मोदी जी पैरवी को सुप्रीम कोर्ट के अवधारणा बताने का दुस्साहसर कर सके। खुद सुप्रीम कोर्ट भी शायद कर मोदी जी के वक्तव्य को चुपचाप सुनकर अपमान का धूँट पोकर रह जाएगा। इलेक्टोरल बांड के समर्थन में सीना ठोकर कर खाइ बड़े होना कोई आसान चाचा नहीं है। ये वो शीर्ष है जिसके लिए मोदी जी को परमवीर चक्र दिया जा सकता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने कहा कि उनकी सरकार की चुनावी बॉण्ड योजना जल्दी संपादित कर दी जाएगी। और इसके बाद चुनावी बॉण्ड योजना को जल्दी संपादित कर दी जाएगी।

ता। जब इन्हें शोध पढ़ पर रहा व्यक्ति पूरी जिम्मेदारी से यह लिखता है तो स्पष्ट है कि उसमें कोई गहरा दर्त है। वैसे अमेरिकी समाज में सूचना की बाढ़ आई हुई है-किसी भी समाचार को निरंतर देने के लिए सैकड़ों प्रसार माध्यम समाचार पत्र, प्रतिकारण्, टीवी चैनल आदि मौजूद हैं। बाहरी तौर पर प्रेस की अभिव्यक्ति को जगबां की स्वतंत्रता है। इसके बावजूद राष्ट्रपति बुश के दूसरे चुनाव के समय अमेरिकी जनता को एक सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे के बारे में सही सूचना उपलब्ध नहीं थी। विश्व स्तर पर आम तौर पर यह जानकारी पहुंच चुकी थी कि सदम हुसैन सरकार के पास न तो महविनाशक हथियार थे और न ही उसका अल कायदा से या 9/11 के हमले से कोई संबंध था। पर इन्हे व्यापक और तथाकथित बेहद स्वतंत्र सूचना तंत्र वाले अमेरिका में हुए एक बड़ा बदलाव नारा हथियार थे और उसका 9/11 के हमले से संबंध था। अमेरिकी नागरिकों की यह गलतफहमी कई स्वेच्छाओं में सामने आई। सबाल वाजिब है कि ऐसा तंत्र, जहां सूचना का अधिकार भी है, सब तरह का सूचनाओं के प्रसार की स्वतंत्रता है, बहुत से माध्यम सक्रिय हैं और अब्बों डॉलरों का सूचना उद्योग है, वहां सबसे चर्चित मुद्दे पर सही जानकारी लोगों तक क्यों नहीं पहुंचती है? स्पष्ट है कि सूचना के अधिकार का कानून बनाने के लिए तैयार हो जाने का अर्थ यह नहीं है कि किसी सरकार का चरित्र मूल रूप से पारदर्शी और ईमानदार हो गया है। हां, इतना जरूर है कि सूचना के अधिकार का उपयोग सजगता और समझदारी से किया जाए तो इससे सरकार और प्रशसन को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाने के अवसर अवश्य उपलब्ध होते राजाओं, जो कभी क्रांति लाने वाले थे। उनमें से लक्ष्य प्राप्त हुए थे मात्र कानून बनने से लक्ष्य प्राप्त हुए थे नहीं मान लेना चाहिए। इस कानून से जो अवसर प्राप्त हुए हैं, उनका उपयोग करते हुए पारदर्शिता और लोकतंत्र को सशक्त करने के प्रयास निरंतर जारी रहने चाहिए। यदि नागरिकों ने ऐसे तो सजगता और सक्रियता नहीं दिखाई तो सरकारें पारदर्शिता का प्रदर्शन अधिक करेंगी पर पारदर्शिता को आत्मसात कर करेंगी। पारदर्शिता के बल किसी सरकार या सरकारी संस्थान के लिए नहीं अपितृ सभी सामाजिक संस्थानों-संगठनों और सार्वजनिक जीवन जीने वाले सभी व्यक्तियों के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन सब के लिए पारदर्शिता का अर्थ किसी वैधानिक मजबूरी से कहीं अधिक व्यापक होना चाहिए कहाँ अधिक व्यापक होना चाहिए पारदर्शिता का अर्थ केवल यह नहीं है कि यदि कानून ने हमें कोई सूचना सार्वजनिक करने के लिए कहा है

किये जा चुके इलेक्टोरल बांड को समस्मान सर्वोधानिक बना देंगे, क्योंकि ये बांड उनकी पार्टी के लिए कामयेदृश्य साबित हुए हैं। दरअसल मैं मोदी जी का जितना बड़ा और मुख्खर आलोचक हूँ उतना ही प्रशंसक भी।

वे जिस हिकमत अपमली से गलत को सही और सही को गलत साबित करने में महिर हैं, वैसा देश में आज कोई दूसरा नेता नहीं है। मोदी जी जैसा दमखम पूर्व के किसी प्रधानमंत्री में था ही नहीं। इंदिरा गांधी में भी नहीं, जबकि वे तो तबकी भाजपा (जनसंघ) के लिए दुर्गा थीं। इंदिरा जी को भाजपा (जनसंघ) ने उदारापूर्वक 1971 के शाही पार्टी संग्राम के बाद चांगले देश में ऐसी दोनों तरफ से बहुत अधिक विवादित विषयों पर वार्ता की जाएगी।

बनवाने के लिए दुर्गा कहा गया था, कांग्रेससियों को चाहिए कि वो मोदी जी को देश को जबरन विश्वव्यु बनाने के लिए तांडव करने वाला शिव कहकर उत्थान हो जाये। मोदी जी ने कांग्रेस द्वारा पिछले साढ़े छह दशक में जितना कुछ किया था, उसे एक दशक में ध्वस्त कर दिया। निर्माण और ध्वंश दो समानांतर क्रियाएं हैं, कोई देश बनाता है तो कोई देश बिगाड़ता है। मोदी जी दोनों काम एक साथ कर रहे हैं। वे अपने सपनों का देश बना रहे हैं, जिसमें उनके अलावा कोई दूसरा सुप्रीम नहीं है। फिल्म निरामार्त मनोज कुमार यदि आज अपनी कोई नई फिल्म बनाते तो उसमें गीत के बोल होते ही तो उसे देश का वासा है। फिल्म ने ऐसी दोनों तरफ से बहुत अधिक विवादित विषयों पर वार्ता की जाएगी।











